Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 1
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

भारत की विभिन्न शिक्षा नीतियां : जनपद वाराणसी में शिक्षा की स्थिति का एक अध्ययन

प्रवीण कुमार गौतम[1] श्रीप्रिया पाण्डेय[2]

[1]प्रवीण कुमार गौतम शोध छात्र, लोक प्रशासन विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय।
[2]श्रीप्रिया पाण्डेय शोध छात्रा, इतिहास विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय।

Article Info

Accepted : 20 Jan 2025
Published : 10 Feb 2025

Publication Issue :
January-February-2025
Volume 8, Issue 1

Page Number : 177-184

सारांश– प्राचीन काल से ही वाराणसी अथवा काशी शिक्षा, कला, संगीत एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहाँ पर अनेक संत गुरूओं ने जन्म लिया एवं उपदेश दिये जो विश्वविख्यात भी हैं। समय के उतार चढ़ाव ने वाराणसी के शिक्षा की संकृति को प्रभावित किया। वर्तमान में आधुनिक शिक्षा ने भी वाराणसी को गौरवान्वित कर रही है। किसी भी समाज अथवा देश के विकास का मापक उसकी शिक्ष व्यवस्था है। शिक्षा ही अच्छा– बुरा का बोध कराती है एवं व्यक्ति को सही निर्णय लेने में सहायक होती है। वाराणसीजिले में शिक्षा के बुनियदी अवश्यकताओं की स्थिति किस अवस्था मेंहै। शिक्ष को केन्द्र में मान कर वाराणसीजिले के शिक्षा व्यस्था को परखने के लिए यह शोध आलेख प्रस्तुत किया जा रहा है। यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों यथा प्रकाशित रिपोर्ट, शोध आलेखों, सरकारी दस्तावेजों एवं इन्टरनेट से संबंधित कार्यलय की वेबसाइट पर आधारित है।

प्रमुख शब्द– शिक्षा, समाज, अधिगम, बच्चे, नीतियां, बहुमुखी।

प्रस्तावना– निसन्देह राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका होती है।शिक्षा का गरीबी, बेरोजगारी को कम करने, स्वास्थ्य तथा पोषण मानकों में सुधार करने में मुख्य भूमिका रही है।शिक्षानिरंतर मानव विकास आधारित वृद्धि को प्राप्त करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य कर सकती है।समग्र शिक्षा के दायरे में, प्राथमिक शिक्षा को एक बुनियादी मानव अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है, जो व्यक्तियों और समाज दोनों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है (UNESCO, 2008)। देखा जाये तो पिछले कुछ वर्षों में, भारत ने स्कूली शिक्षा में नामांकन और गुणवत्ता में सुधार के लिए विभिन्न तरीकों की कोशिश की है। हालाँकि, जैसा कि कुछ सर्वेक्षणों और आंकड़ों से पता चलता है, हमारी आकांक्षाओं और वास्तविक उपलब्धियों के बीच एक बड़ा अंतर है।भारत ही एक मात्र ऐसा देश नहीं है जहाँ सरकारी स्कूलों का प्रदर्शन खराब है। अपितु, दुनिया भर में अधिसंख्य लोग अपने देशों के सरकारी स्कूलों के प्रदर्शन से निराश हैं।
प्राथमिक शिक्षा का मानव जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि आगे की शिक्षा प्राथमिक की बुनियाद पर निर्भर करती है। दूसरेशब्दों में हम कह सकते हैं कि प्राथमिक शिक्षा हमारी आगे की शिक्षा और जीवन को एक दिशा देती है। कई छात्र जो प्राथमिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते और निरक्षर रह जाते हैं, वे अपना

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

जीवन मजदूर, फेरीवाला, किसान, बेकारी आदि के रूप में शुरू करते हैं, जबकि जो छात्र अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी कर लेते हैं वे उच्च प्राथमिक शिक्षा, फिर माध्यमिक शिक्षा और फिर उच्च शिक्षा इत्यादि में प्रवेश करते हैं।ऐसे छात्र अपनी रुचि के अनुसार निर्णय लेते हैं। जिनमें अतिमहत्वाकाक्षां होती है एवं परिश्रम करते हैं वे अपनी मनपसंद के आईएएस, पीसीएस, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, मैनेजर, शिक्षक आदि बनते हैं। प्राथमिक शिक्षा को पूर्ण किये बगैर किसी को भी उच्च प्राथमिक शिक्षा और आगे प्रवेश की अनुमति नहीं है। इस प्रकार उच्च शिक्षा पूरी करने के लिए पहले माध्यमिक शिक्षा पूरी करनी होती है और माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के लिए पहले उच्च प्राथमिक शिक्षा पूरी करनी होती है और उच्च प्राथमिक शिक्षा पूरी करनी होती है। इसलिए प्राथमिक शिक्षा पूर्ण किए बिना कोई भी आगे की शिक्षा के लिए नहीं बढ़ सकता। यह आगामी शिक्षा के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।

प्राथमिक शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में बहुमूल्य स्थान है। इसी अवस्था में व्यक्ति के विकास की नींव आकार लेती है। इसी अवस्था में व्यक्ति में मूल्यों एवं आदर्शों के विकास का मजबूत आधार आकार लेता है।

अध्ययन का उद्देश्य– वाराणसी जिले में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की रहे बच्चों के जानकारी के स्तर का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा– कसी भी प्रामाणिक जांच के लिए शोध विषय पर उपलब्ध साहित्य की व्यापक समीक्षा आवश्यक है। इस गतिविधि से विषय को परिभाषित करने, उद्देश्य तैयार करने, कार्यप्रणाली तय करने और अध्ययन के निष्कर्षों पर चर्चा और विश्लेषण करने में मदद मिलती है।

भारत का आर्थिक सर्वेक्षण (2016–17): के अनुसार, भारत पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा में निवेश करके और रोजगार के लिए उचित कौशल प्रदान करके मानव पूंजी को बढ़ाकर बड़े पैमाने पर गरीबी की समस्या को दूर कर सकता है। भारत की दरिद्रता को पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा में निवेश करके और रोजगार के लिए उचित कौशल प्रदान करके मानव पूंजी को बढ़ाकर दूर किया जा सकता है।

डोंगरे, अंबरीश और कापू, अवनी (2016): ने भारत में प्राथमिक शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय के रुझान का विश्लेषण किया। परिणाम से पता चला है कि 2011–12 से 2014–15 के बीच नाममात्र की वृद्धि के बावजूद सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के अनुपात में खर्च में गिरावट आई है। 2011–12 से 2014–15 में प्रति छात्र व्यय में 37 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अलग–अलग राज्यों के व्यय में भिन्नता रही है।

ड्रेज और सेन, (1996): ने शिक्षा के उपयोगी उपकरण और आंतरिक मूल्य के बीच अंतर किया। पहला शिक्षा को रोजगार और आय वृद्धि के संदर्भ में मापी गई सामाजिक और आर्थिक गतिशीलता के अवसरों में सुधार करने के साधन के रूप में संदर्भित करता है, जबकि दूसरा शिक्षा द्वारा प्रदान किए जाने वाले मात्रात्मक लाभों से कहीं आगे जाकर किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में सुधार को संदर्भित करता है। हालाँकि दोनों ही महत्वपूर्ण हैं लेकिन हाल के वर्षों में उपयोगी मूल्यों पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है।

शोध विधि – असर (Annual Status of Education Report) 2019 द्वारा वाराणसी जिले के कुल 60 गाँव से 4 से 8 वर्ष के प्री–प्राइमारी एवं प्राइमारी में नामांकित कुल 1615 बच्चों के आँकाड़ों को एकत्र किया गया है। उन्हीं आँकड़ों के आधार पर तालिका में संयोजित कर तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

नामांकन की स्थिति– विद्यालयों में नामांकन की स्थिति से वहाँ के शिक्षा के रूझान के स्तर के विषय में पता चलता है। प्रारम्भिक स्तर पर बच्चों के नामांकन से अभिभावकों का भी शिक्षा के प्रति रूचि तथा

अध्यापकों के परिश्रम को भी समझा जा सकता है। इसी सन्दर्भ में निम्नलिखित तालिका में बच्चों के नामांकन के बारे में तथ्य दर्शाये गये हैं।

तालिका संख्या–1

वाराणसी जिले में 4 से 8 वर्ष के बच्चों का विभिन्न विद्यालयों में नामांकन का प्रतिशत

आयु	प्री–स्कूल			स्कूल			नामांकन रहित	कुल
	आंगनवाड़ी	सरकारी प्री–प्राइमरी	प्राइवेट एलकेजी/यूकेजी	सरकारी	प्राइवेट	अन्य		
4 वर्ष	27.1	2.0	36.4	7.0	0.5	0.6	26.4	100
5 वर्ष	20.2	2.0	45.7	15.6	4.1	0.0	12.4	100
6 वर्ष	5.9	1.1	34.4	33.7	22.2	0.0	2.7	100
7 वर्ष	0.6	0.0	19.1	39.8	39.1	0.4	1.0	100
8 वर्ष	1.3	1.0	7.2	40.1	49.5	0.3	0.6	100

स्रोतः असर 2019

तालिका संख्या 1 में 4 से 8 वर्ष के बच्चों का विभिन्न विद्यालयों में नामांकन की स्थिति को दर्शाया गया है। आँकड़ों से पता चलता है कि वाराणसी जिले में प्री–स्कूल में 4 वर्ष के बच्चे की श्रेणी में 27.1 प्रतिशत आंगनवाड़ी, 2 प्रतिशत सरकारी प्री–प्राइमरी, 36.4 प्रतिशत प्राइवेट विद्यालयों में एलकेजी अथवा यूकेजी में है, इसी प्रकार इसी आयु वर्ग के स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों में से 7 प्रतिशत सरकारी स्कूल, 0.5 प्रतिशत प्राइवेट स्कूल एवं 0.6 प्रतिशत किसी अन्य विद्यालयों में पढ़ाई करते हैं वहीं 26.4 प्रतिश बच्चे कभी स्कूल नहीं गये अथवा पढ़ाई छोड़ दिये हैं। 5 वर्षों की श्रेणी के 20.2 प्रतिशत बच्चों का आंगनबाड़ी में, 2.0 प्रशित का सरकारी प्री–नर्सरी में एवं 45.7 प्रतिशत बच्चों का नामांकन प्रइवेट एलकेजी अथवा यूकेजी में हुआ है, सरकारी स्कूल में 15.6 प्रतिशत बच्चे, 4.1 प्रतिशत बच्चे प्राइवेट में नमांकन हुआ है जबकि 12.4 प्रमिशत बच्चों का नामांकन नहीं हुआ है अथवा वे स्कूल ही नहीं जाते है।

बच्चों के आयु के बढ़ते क्रम में देखें तो आंगनवाड़ी एवं सरकारी प्री–प्राइमरी में नामांकन की संख्या कम होती जा रही है। आंगनबाड़ी एवं प्री–प्राइमरी की तुलना में प्रावेट एलकेजी अथवा यूकेजी में बच्चों का नामांकन अधिक संख्या में पाया गया है। स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में देखा जाये तो 7 वर्ष के बाद प्राइवेट स्कूल में बच्चों का नामांकन अधिक संख्या में पाया गया है। आयु बढ़ने के साथ बच्चों की नामांकन स्थिति में सुधार होता जा रहा है।

अतः विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि प्री–प्राइमारी में नामांकन की स्थिति सही है। बहुत की कम मात्रा में पढ़ाई छोड़ने वाले बच्चे पाये गये हैं।

तालिका संख्या–2. ग्रेड एवं स्कूल के प्रकार के अनुसार 4 से 8 वर्ष के बच्चों के नामांकन का प्रतिशत

कक्षा	सरकारी	प्राइवेट	कुल
कक्षा 1	48.1	51.9	100
कक्षा 2	50.6	49.4	100
कक्षा 3	63.4	36.6	100

स्रोतः असर 2019

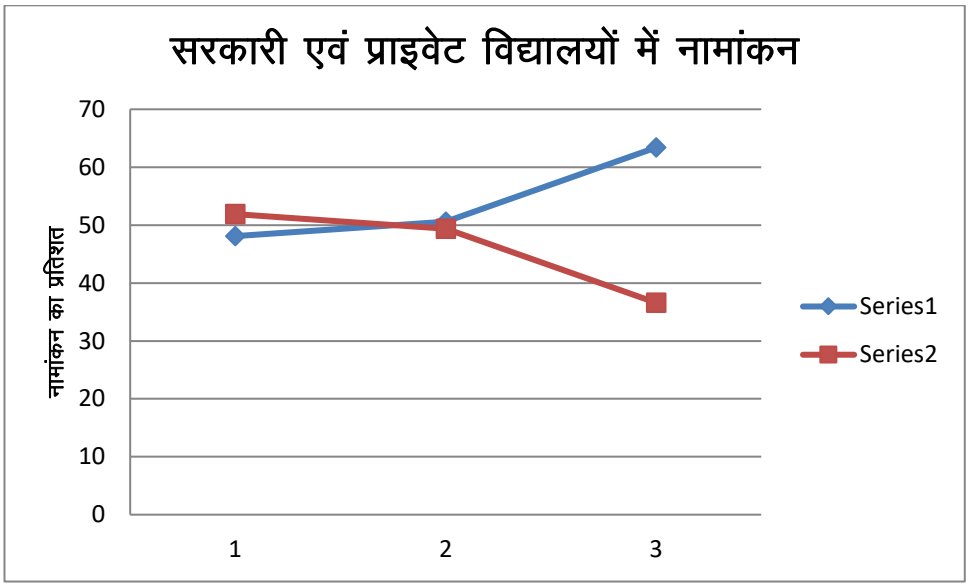

उपर्यक्त ग्राफ के अवलोकन से पता चलता है कि सरकारी विद्यालयों में जैसे जैसे कक्षाओं में बढ़ोत्तारी हो रही है उसी क्रम में बच्चों के नामांकन में भी वृद्धि हो रही है इसके विपरीत प्राइवेट विद्यालयों में बच्चों के कक्षाओं के अनुक्रम में नामांकन में क्रमशः कमी देखने को मिल रही है। इस आधार पर हम कह सकेते हैं कि प्ररम्भिक स्तर पर अभिभावकों ने अपने बच्चे का नामांकन के सन्दर्भ में सरकारी विद्यालयों को प्रथमिकता दी है।

तालिका संख्या–3

4 से 8 वर्ष के बच्चों की स्कूली शिक्षा की स्थिति एवं कक्षाएं (प्रतिशत में)

आयु	नामांकन रहित	प्री–प्राइमरी	कक्षा 1	कक्षा 2	कक्षा 3	कक्षा 4 एवं उससे अधिक	कुल
4 वर्ष	25.5	63.9	7.6	0	3.0	0	100
5 वर्ष	12.2	67.1	16.8	0	3.9	0	100
6 वर्ष	2.6	40.6	34.5	18.2	4.1	0	100
7 वर्ष	1.0	19.5	31.5	28.0	15.9	4.2	100
8 वर्ष	0.6	10.3	13.4	30.1	31.0	14.6	100

स्रोतः असर 2019

उपर्यक्त तालिका संख्या 3 में बच्चों के विभिन्न कक्षाओं में नामांकन की स्थिति को दर्शाती है। तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है 4 वर्ष आयु की श्रेण में 25.5 प्रतिशत बच्चों का कहीं भी नामांकन नहीं है अथवा वे विद्यालय नहीं जाते। 63.9 प्रतिशत बच्चे प्री–प्राइमरी में नामांकित हैं, कक्षा 1 में 7.6 प्रतिशत बच्चे, कक्षा 3 में 3 प्रतिशत बच्चों का नामांकन हुआ है। 5 वर्ष के आयु की श्रेणी में 12.2 प्रतिशत बच्चों का कहीं भी नामांकन नहीं है। 67.1 प्रतिशत बच्चों का प्री–प्रइमारी में नामांकन है, कक्षा 1 में 16.8 प्रतिशत बच्चे हैं एवं 3.9 प्रतिशत बच्चे कक्षा 3 में पढ़ रहे हैं। 6 वर्ष आयु वर्ग के 2.6 प्रतिशत बच्चों का किसी भी विद्यालय में नामांकन नहीं है। 40.6 प्रतिशत बच्चों का नामांकन प्री–प्रइमरी में नामांकन है, 34.5 प्रतिशत बच्चे कक्षा 1 में

पढ़ाई कर रहे हैं, 18.6 प्रतिशत के बच्चों का नामांकन कक्षा 2 में है एवं 4.1 प्रतिशत बच्चों का नामांकन कक्षा 3 में है। 7 एवं 8 वर्ष्र की आयु श्रेणी में उत्तरोतर नामांकन में वृद्धि देखने को मिल रही है।

तालिका संख्या–4

4 से 8 वर्ष के बच्चों का प्रतिशत जो मूल भावनाओं की पहचान कर सकते है

आयु	खुशी	दुःख	गुस्सा	भय	सभी 4 भावनाएं
4 वर्ष	77.0	41.0	46.5	45.6	21.2
5 वर्ष	76.5	43.4	55.6	53.0	31.7
6 वर्ष	82.5	58.4	66.4	64.6	42.3
7 वर्ष	88.6	57.0	76.2	68.5	48.5
8 वर्ष	90.4	69.1	80.6	77.0	62.1

स्रोतः असर 2019

उपर्यक्त तालिका में मूल प्रवृत्ति की भावनाओं की पहचान के विषय में है। तालिका के आँकड़ो से स्पष्ट है कि 4 वर्ष आयु वर्ग में 77 प्रतिशत बच्चे खुशी अथवा प्रसन्नता के क्षण को पहचानने में सक्षम हैं, 41 प्रतिशत बच्चे दुःख के क्षण को पहचानते हैं, 46.5 प्रतिश ने गुस्से के स्वभाव को पहचानते हैं, वहीं पर 45.6 प्रतिशत बच्चे भय वाली प्रवृत्ति को पहचान जाते हैं। 21.2 प्रतिशत बच्चे सभी 4 प्रकार की भावनाओं को पहचानने में सक्षम हैं। 5 वर्ष की आयु वर्ग में 76.5 प्रतिशत बच्चे प्रसन्नता, 43.4 प्रतिशत दुःख, 55.6 प्रतिशत गुस्सा एवं 53 प्रतिशत बच्चे भय को पहचान जाते हैं तथा 31.7 प्रतिशत बच्चे सभी 4 प्रकार के भावनाओं को पहचानते हैं। 6 वर्ष की आयु वर्ग में 82.5 प्रतिशत बच्चे प्रसन्नता के स्वभव को, 58.4 प्रतिशत दुःख के स्वभाव को, 66.4 प्रतिशत गुस्सा के स्वभाव को एवं 66.4 प्रतिशत बच्चे भय के स्वभाव को पहचान जाते हैं तथा 42.3 प्रतिशत बच्चे सभी 4 प्रकार के भावनाओं को पहचानते हैं। 7 एवं 8 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के प्रत्युत्तर को देखा जाये तो कहा जा सकता है कि आयु के बढ़ने के साथ मानवीय प्रवृत्ति की भावनाओं को पहचानने की क्षमता बढ़ती जाती है।

भाषा एवं अंको का प्ररम्भिक संज्ञानः– जब बच्चा स्कूल जाने लगता है तो हिन्दी अथवा अंग्रेजी के वर्णमालाओं एवं अंको को अनेक विधियों से शिक्षक सिखाने का प्रयास करता है। जिसमें बच्चा शब्दों की क्रमबद्धता को सिखता है। वह आकारों को पहचानने लगता है, पहेलियों को सुलझाने में अपना मस्तिष्क का अपयोग करता है एवं शिक्षक द्वारा पढ़ाये जा रहे पाठ्य को ग्रहण करने के लिए उसे सुनता है एवं समझाता है। निम्नलिखत तालिका 5 एवं 6 में भाषा एवं अंको के ज्ञान के विषय में विश्लेषण किया जा रहा है–

तालिका संख्या–5. संज्ञानात्मक और प्रारंभिक भाषा ज्ञान

कक्षा	संज्ञानात्मक			प्रारंभिक भाषा
	क्रमबद्धता	आकार की पहचान	पहेली	सुनना और समझाना
कक्षा 1	58.6	43.8	43.6	65.1
कक्षा 2	65.2	54.8	50.7	76.7
कक्षा 3	81.3	63.0	58.4	81.9

स्रोतः असर 2019

उपरोक्त तालिका में कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों के भाषा ज्ञान के बोध के बारे में तथ्य प्रदर्शित किये गये हैं। तथ्यों से स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 के 58.6 प्रतिशत बच्चे शब्दों के क्रमबद्धता को जानते हैं, 43.8 प्रतिशत बच्चों को आकृति की पहचान है, 43.6 प्रतिशत बच्चे पहेलियों को सुलझा सकते हैं एवं 65.1 प्रतिशत बच्चे भाषा को सुनने तथा समझ जाते हैं। कक्षा 2 के 65.2 प्रतिशत बच्चे शब्दों के क्रमबद्धता को जानते हैं, 54.8 प्रतिशत बच्चों को आकृति की पहचान है, 50.7 प्रतिशत बच्चे पहेलियों को सुलझा सकते हैं एवं 76.7 प्रतिशत बच्चे भाषा को सुनने तथा समझ जाते हैं। इसी प्रकार कक्षा 3 के 81.3 प्रतिशत बच्चे शब्दों के क्रमबद्धता को जानते हैं, 63 प्रतिशत बच्चों को आकृति की पहचान है, 58 प्रतिशत बच्चे पहेलियों को सुलझा सकते हैं एवं 81.9 प्रतिशत बच्चे भाषा को सुनने तथा समझ जाते हैं।

अतः तथ्यों के अवलोकन एवं विश्लेषण से स्पष्ट है कि जैसे जैसे कक्षा के स्तर में प्रगति होती जाती है उसी प्रकार से क्रमशः बच्चों में भाषा के ज्ञान का भी विकास होने लगता है।

तालिका संख्या–6

प्रत्येक कक्षा में संख्याओं/अंको को पहचानने की बच्चों की क्षमता

कक्षा	जानकारी नहीं (1–9)	संख्या की पहचान (1–9)	संख्या की पहचान (11–99)	कुल
कक्षा 1	31.2	30.5	38.3	100
कक्षा 2	9.8	38.5	51.7	100
कक्षा 3	4.2	39.7	56.1	100

स्रोतः असर 2019

उपरोक्त तालिका में कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों के अंको को पहचाने की क्षमता के विषय में तथ्य प्रदर्शित किये गये हैं। तथ्यों से स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 के 31.2 प्रतिशत बच्चों को 1 से 9 अंको की जानकारी नहीं है,30.5 प्रतिशत बच्चे 1 से 9 तक के अंको को पहचानते हैं एवं 38.3 प्रतिशत बच्चों को 11 से 99 तक की संख्या का ज्ञान है। कक्षा 2 में अध्ययन करने वाले 9.8 प्रतिशत बच्चों को 1 से 9 अंको की जानकारी नहीं है, 38.5 प्रतिशत बच्चे 1 से 9 तक के अंको को पहचानते हैं एवं 51.7 प्रतिशत बच्चे को 11 से 99 तक की संख्या को पहचानते हैं। इसी प्रकरी कक्षा 3 के 4.2 प्रतिशत बच्चों को 1 से 9 अंको की जानकारी नहीं है, 39.7 प्रतिशत बच्चे 1 से 9 तक के अंको को पहचानते हैं एवं 56.1 प्रतिशत बच्चों को 11 से 99 तक की संख्याओं का ज्ञान है।

तालिका के तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि बच्चों के कक्षाओं के अनुक्रम में वृद्धि होने के साथ साथ उनके अंको अथवा संख्याओं की जानकारी में भी वृद्धि हो रही है। किन्तु चिन्ता की यह बात है कि कक्षा 3 के सभी बच्चों को संख्या एवं भाषा का प्ररम्भिक बोध हो जाना चाहिए । इससे अस्पष्ट है कि शिक्षा के स्तर में सुधार करने की आश्यकता है।

पढ़ने की क्षमता का विकास – प्रायः यह अनुमान लगाया जाता है कि कक्षा 1 में नामांकित बच्चों को अक्षरों का ज्ञान हो जाता है और वे शब्दों को पढ़ने का प्रयास भी करते हैं। निम्नलिखित तालिका में कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों का पढ़ने की क्षमता का परीक्षण कर तथ्य दिये गये हैं जिसका विश्लेषण तालिका के नीचे दिया गया है–

तालिका संख्या–7

प्रत्येक कक्षा में बच्चों की पढ़ने की क्षमता

कक्षा	अक्षरों की जानकारी नहीं	अक्षरों का ज्ञान	शब्दों का ज्ञान	कक्षा 1 के स्तर का पाठ	कुल
कक्षा 1	41.9	31.5	7.9	18.7	100
कक्षा 2	26.3	24.1	8.1	41.5	100
कक्षा 3	16.8	25.3	4.4	53.5	100

स्रोतः असर 2019

उपर्युक्त तालिका 7 में में कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों के पढ़ने की क्षमता के बारे में आँकड़ों को दर्शाया गया है। तथ्यों के अलोकन से सपष्ट होता है कि कक्षा 1 के 41.9 प्रतिशत बच्चों को अक्षरों की कोई जानकारी नहीं है, 31.5 प्रतिशत बच्चों को अक्षरों का ज्ञान है, 7.9 प्रतिशत को शब्दों का ज्ञान है एवं 18.7 प्रतिशत बच्चे कक्षा 1 स्तर के पाठ्यपुस्तकों को पढ़ सकते हैं।कक्षा 2 के 26.3 प्रतिशत बच्चों को अक्षरों की कोई जानकारी नहीं है, 24.1 प्रतिशत बच्चों को अक्षरों का ज्ञान है, 8.1 प्रतिशत बच्चों को शब्दों का ज्ञान है एवं 41.6 प्रतिशत बच्चे कक्षा 1 स्तर के पाठ्यपुस्तकों को पढ़ सकते हैं। इसी प्रकार कक्षा 3 के 16.8 प्रतिशत बच्चों को अक्षरों की कोई जानकारी नहीं है, 25.3 प्रतिशत बच्चों को अक्षरों का ज्ञान है, 4.4 प्रतिशत बच्चों को शब्दों का ज्ञान है एवं 53.5 प्रतिशत बच्चे कक्षा 1 स्तर के पाठ्यपुस्तकों को पढ़ सकते हैं।

तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कक्षाओं के क्रम के अनुसार बच्चों में अक्षर ज्ञान में सुधार हो रहा हैं किन्तु चिन्ता की बात यह है कि कक्षा 3 में पढ़ने वाले 16 प्रतिशत से अधिक बच्चों को अक्षर का ज्ञान नहीं है। कहीं न कहीं शिक्षाव्यवस्था की कमी के कारण यह स्थिति देखने को मिल रही है।

निष्कर्ष एवं सुझाव – इस अध्ययन में उत्तर प्रदेश का वाराणसी जिला प्रधानमंत्री का लोक सभा क्षेत्र होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी होने की आशा की जाती है, किन्तु उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों के जैसे ही बुनियादी शिक्षा का स्तर देखने को मिल रहा है। तथ्यों के विश्लेषण में यह स्पष्ट हो कर आया है कि कक्षा के 1 से 3 कक्षा के बच्चों को अक्षर ज्ञान एवं शब्दों का ज्ञान नहीं है। इससे शिक्षा की दशा एवं दिशा को समझा जा सकता है। आश्यकता है कि शिक्षा के प्रत्येक पहलुओं पर अनुसाशानात्मक रूप से कार्य योजना को निष्पादित किया जाये।

सन्दर्भः

1. Annual Status of Education Report 2019
2. Chand, Dinesh. (2014). Privatization, Globalization And Autonomy In Teacher Education, International Journal of Applied Research, Vol. 1, (1 PP90-93
3. Rao, K.P. Subha (2013): Dimension of modern education, Akancha Publishers, New Delhi

4. State Level Achievement Survey Uttar Pradesh 2014-15: State Council of Research and Training, Uttar Pradesh.
5. Sharma , Pratibha and Khan, Mahe Pecker: A Comparative Study of Attitude of Prospective Teachers Towards Privetization of Education; Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, Online ISSN 2348-3083, SJ; www. http://www.srjis.com/; FEB-MAR 2018, VOL- 6/26;
6. UNESCO (2008). A View inside Primary Schools: A World Education Indicators Cross-national Study, Montreal: UNESCO Institute for Statistics.